आशिक रायबरेलवी

ग़ज़ल तेरा कोई सानी नहीं है।
कहीं भी कोई उरियानी नहीं है।।
जवानी लौट कर आनी नहीं है।
मगर क्यूँ इसपे निगरानी नहीं है।।
मोहब्बत क्या है रुहानी तअल्लुक।
तअल्लुक इस का जिस्मानी नहीं है।।
मोहब्बत उसको हम कैसे कहेंगे।
अगर चाहत में कुर्बानी नहीं है।।
मिले हैं मुद्दतों के बाद हम तुम।
पुरानी बात दोहरानी नहीं है।।
कंवल की पंखुड़ी में कैद रहकर।
किसी भौंरे को हैरानी नहीं है।।
तेरी आंखों में है तस्वीरे जानां।
ग़ज़ल की रूह निसवानी नहीं है।।
मेरा चेहरा अगर है बदनुमा सा।
तेरी सूरत भी नूरानी नहीं है।।
मैं इंसां हूँ सभी कहते हैं आशिक।
जरा भी खूए इंसानी नहीं है।।

शानुर रहमान साबरी

घरों को दिल मैं बनाता,दिलों को घर करता
अगर मैं शौक़ ए तमन्ना ए बाल ओ पर करता

मैं सब ज़'ईफ़ दरख़्तों के दुख से होता हुआ
किसी क़दीम समन्दर को रहगुज़र करता

वजूद ए रंग मे बे- रंग से मुसाफ़िर को,
वो सादा-लौह तो नहीं था कि रंग ए घर करता

वो जिस से शहर की दीवार बे-नविश्ता है
मैं उस की शाख़-ए-तहय्या को बे-समर करता

सफ़र दराज था - लेकिन बहुत दराज नहीं
अगर मैं शौक़ ए तमन्ना ए बाल ओ पर करता

फिर एक मोड़ कि वो थक गई,बसद मैं भी
किसी की आंख में कब तक कोई सफ़र करता

करम था सब को मिले अपनी-अपनी ज़ात के दुख
ये शाम किस की स्याही को अपने सर करता

वो एक शै कि बहुत पास से गंवाई गई !
वो इक ख़ला कि जिसे पुर भी उम्रभर करता

मैं मर रहा था कि जीने के सब वसाइल हों
सफ़र नजाद था असबाब मुख़्तसर करता

ISSN:2583-8849